International Journal of Applied Research 2022; 8(6): 614-615

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2022; 8(6): 614-615
www.allresearchjournal.com
Received: 14-04-2022
Accepted: 20-05-2022

गजेन्द्र कुमार यादव
शोधार्थी, बी.एन. मंडल विश्वविद्यालय, लालू नगर, मधेपुरा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
गजेन्द्र कुमार यादव
शोधार्थी, बी.एन. मंडल विश्वविद्यालय, लालू नगर, मधेपुरा, बिहार, भारत

प्राचीन भारत में पशुपालन पद्धतियों की अवधारणा

गजेन्द्र कुमार यादव

सारांश
प्राचीन भारतीय ग्रंथों के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि पुशपालन भारत में आजीविका का मुख्य आधार था और यहाँ के लोगों ने पशुओं को ईश्वर का दर्जा दिया। अनेक पशुओं के देवी-देवताओं के वाहन रूप में पदस्थापित किया गया और आधुनिक दौर के संचार युग में भारतवासी इनकी पूजा कर रहे हैं। पशुपालन ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महत्त्वपूर्ण बना हुआ है और कई समुदाय के लोगों की आजीविका पशुओं के सहारे ही संचालित हो रही हैं। पशुओं को पालने-पोसने की व्यवस्था का सूक्ष्मतम अध्ययन करते ही स्पष्ट हो जाता है कि मानवों ने शिकारी जीवन से ही पशुओं का उपयोग करना आरंभ किया जो कालांतर में कृषि, आवागमन आदि क्षेत्रों में जाकर स्थिर हो गई। मानवों ने बहुउपयोगी पशुओं को पालतू बनाया और उनके प्रजनन्न समेत जीवन की सभी अवस्थाओं पर नियंत्रण कर लाभ अर्जित करने की पद्धति विकास किया। समय चक्र के साथ पशुपालन ने व्यवस्था का रूप लिया। खेत-खलियानों, बैलगाड़ी-टमटम आदि में पशुओं के उपयोग ने मानवों की कठिनाईयाँ दूरकर दी। पशुओं से दोस्ती कर मानवों ने अपने उपभाग को बढ़ाया। पशुपालन प्रगति करने लगा और इस प्रगति-चक्र का संपूर्ण ऐतिहासिक तथ्य भी मौजूद है।

कूटशब्द: पुशपालन, संचार युग, प्रजनन्न, कृषि

प्रस्तावना
हड़प्पा और मोहनजोदड़ों की सभता के प्रकाश में आने के बाद एशिया विशेषकर भारत के प्राचीन जीवन का समृद्धशाली सामाजिक इतिहास भी उजागर हुआ है। पुरात्ववेत्ताओं ने हड़प्पा की सभ्यता को पाँच हजार वर्ष पुरानी माना है। मार्शल मत के मुताविक हड़प्पा की सभ्यता कुषाणकालीन थी और यहाँ के लोग लोहे का प्रयोग नहीं जानते थे। पर उत्खनन में मिले प्रमाणों से यह ज्ञात होता है कि हड़प्पा संस्कृति के उद्भव स्थायी सिंधु नदी के मैदानी भागों में लोगों का निवास था और इस जगह के निवासी पशुओं को चराते थे। उन्हें थोड़ा-बहुत खेती का भी ज्ञान था। इस समय के जो कृषि साक्ष्य पाकिस्तान के बलूचिस्तान से प्राप्त हुआ है, उसके आधार पर इतिहासकारों ने माना है कि 5500 ई.पू. से 3500 ई.पू. तक भारत के लोग गेहूँ-जौ कपास एवं खजूर से परिचित थे औट खेती करते थे। इसी दौर में उन्होंने कुत्ते, बकरी, भेड़, सूअर आदि जैसे जीव-जन्तुओं पर नियंत्रण प्राप्त कर लिया। इस दृष्टिकोण से देखें तो पशुपालन का बीजा-रोपण भी इस कालखंड में होता दिखाई पड़ता है।
प्राचीन भारत में जब मानवों की आजीविका एवं अन्य जीवन उपक्रमों का निर्वाहन दुष्कर था तब पशु उसके सहायक बने है। पशुओं की उपयोगिता देखकर ही मनुष्यों ने उनका पालन-पोषण आंरभ किया और पशुपालन विधा अथवा व्यवस्था का उदय हुआ। पशुधन मानवीय समाज में विशिष्ट रहा है क्योंकि इनका योगदान कई क्षेत्रों में था। कई कार्य तो ऐसे थे जो बिना पशुओं की सहायता के मनुष्य कर ही नहीं सकता था। ऐतिहासिक तथ्यों के अवलोकरन से प्राचीन भारत में पशुपालन का निम्नलिखित महत्त्व उजागर होता है-

हड़प्पा संस्कृति में पशुपालन– पंजाब के मोंटगोमेरी जिले में हड़प्पा और सिंध (अब पाकिस्तान में) के लरकाना जिले में मोहनजो-दारो की खुदाई से एक अच्छी तरह से विकसित सभ्यता के मूल्यवान पुरातात्विक साक्ष्य मिले। प्रसिद्ध सिंधु घाटी सभ्यता अत्यधिक विकसित संस्कृति और संगठित समाज के लिए जानी जाती थी। सिंधु घाटी सभ्यता के लोग कुत्ते, बैल, भेड़, बकरी, भैंस, घोड़े और हाथियों से परिचित थे। वे दूध, दही, घी और मांस जैसे कई जंगली खेल और पशु उत्पादों के बारे में भी जानते थे। मछली उनका मुख्य पशु आहार था। ये लोग मटन, बीफ, चिकन और कछुए के मांस के शौकीन थे. सिंधु घाटी से प्राप्त मुहरों से बैल, भैंस, बकरी, हाथी, आइबेक्स और कई अन्य जानवरों का ज्ञान मिलता है।

वैदिक युग– वैदिक युग में जानवरों को रखने के बारे में बहुत सारी जानकारी ऋग्वेद में मिलती है, जो आर्यों का सबसे पुराना पवित्र ग्रंथ है। ऋग्वेद में पशुओं को धन माना गया है। आर्य अपने मवेशियों को चरागाहों पर रखते थे, जो उनके आवास के निकट थे।

वे जंगल काटते थे और मवेशी चराते थे। गायों को दिन में तीन बार दूध दिया जाता था। नरों को बधिया करने की प्रथा थी और कृषि परिवहन के लिए बैलों का उपयोग किया जाता था। आर्य केवल गाय पसंद करते थे और भैंस उनके द्वारा आमतौर पर इस्तेमाल किया जाने वाला जानवर नहीं था। इस युग के लोग घरों की रखवाली और सूअर के शिकार के लिए कुत्ते पालते थे।

भेड़ों को अधिकतर ऊन के लिए और बकरियों को दूध के लिए पाला जाता था। बैलों का उपयोग जुताई और सिंचाई के लिए भी किया जाता था। ऋग्वेद में, जौ, गन्ना और तेल निकालने के बाद बचे तिल का उपयोग जानवरों को खिलाने के लिए किया जाता था। गाय के दूध से विशेष ऊर्जा, शक्ति और बुद्धि मिलती है। गाय के गोबर और मूत्र से कृषि खेती का पोषण हुआ। बैल की शक्ति ने कृषि में माल ढुलाई, परिवहन और कुटीर उद्योग जैसी तकनीकों के विकास में मदद की। मृत जानवरों की खाल से चमड़ा उद्योग और हस्तशिल्प को सहारा मिला। अत: वैदिक काल में गौ-पालन सदैव भारतीय जीवनशैली एवं अर्थव्यवस्था का मूल-बिन्दु रहा।

महाकाव्य काल– महाकाव्य काल में, साक्ष्य से पता चला कि मवेशी, भेड़, बकरी, कुत्ते, हाथी और घोड़ों सहित कई घरेलू जानवर और उनके उपयोग थे। गाय के गोबर का उपयोग खाद के रूप में किया जाता था। औषधीय जड़ी-बूटियों और शल्य चिकित्सा प्रक्रियाओं का उपयोग करके विभिन्न बीमारियों के उपचार का विस्तार से वर्णन किया गया है। परिरक्षक और उपचार के रूप में तेल के विभिन्न उपयोगों का उल्लेख किया गया है। सिजेरियन सेक्शन, हिस्टेरेक्टॉमी आदि जैसी सर्जिकल प्रक्रियाएं प्रशिक्षित वैद्यों या चिकित्सकों द्वारा की जाती थीं। कहा जाता है कि फलों के रस, फूलों के अर्क और फलों से बनी वाइन में महान औषधीय गुण होते हैं। कुष्ठ, तपेदिक, मानसिक विकार आदि रोगों का उपचार सहित वर्णन किया गया।

मौर्य काल– मौर्य युग में पशुपालन ने बहुत प्रगति की। मौर्य युग बुद्ध और महावीर के काल से पहले आया था, जिन्होंने जानवरों के प्रति अहिंसा का उपदेश दिया था। सबसे प्रारंभिक बौद्ध ग्रंथ "सुत्तनिपात" में मवेशियों को भोजन, सौंदर्य और खुशी (अन्नदा, वन्नदा और सुखदा) के दाता के रूप में वर्णित किया गया है और इसलिए वे संरक्षित होने के योग्य हैं। इस अवधि तक भैंस भी एक मान्यता प्राप्त डेयरी पशु बन गई।

अर्थशास्त्र में बकरी को गाय और भैंस की तरह एक महत्वपूर्ण दुधारू पशु बताया गया है। भेड़ों को ऊन के लिए पाला जाता था। अर्थशास्त्र के अनुसार, एक प्रजनन झुंड में, प्रत्येक 10 गाय/भैंस के लिए 4 बैल उपलब्ध कराए जाने चाहिए। चरागाह में पशुओं को चारा खिलाना मुख्य प्रथा थी। साथ ही, सूखे भूसे (ट्रिना) और हरी घास (यवसा) का भी अलग-अलग उल्लेख मिलता है, जो पशुओं के आहार में हरे और सूखे चारे के बारे में स्पष्ट अवधारणा का संकेत देता है। खली खिलाने की भी सिफारिश की गई है। गाय, भैंस, खच्चर, ऊँट आदि के लिए राशन का वर्णन कई स्थानों पर अलग-अलग किया गया है। गर्मी और वसंत के दौरान या तो सुबह में एक बार या दो बार, यानी, बारिश के मौसम, शरद ऋतु और सर्दियों के पहले भाग के दौरान सुबह और शाम को दूध निकाला जाता था। भैंस और गाय के दूध में वसा की मात्रा में अंतर सर्वविदित है। दूध की वसा का उपयोग आमतौर पर घी या मक्खन के तेल के रूप में किया जाता था। गाय को चुराने या चोट पहुँचाने पर मृत्युदंड का प्रावधान था।

जब एक व्यक्ति ने एक बैल को दूसरे बैल से लड़वाया तो उस पर जुर्माना लगाया गया। यदि कोई व्यक्ति बैल को घायल कर देता था तो उस पर भारी जुर्माना लगाया जाता था। इस मौर्य युग में गधों का उपयोग सामान ढोने के लिए किया जाता था। घोड़ों का उपयोग उत्सव रथ, युद्ध रथ और यात्रा रथ जैसे विभिन्न प्रकार के रथों को जोड़ने के लिए किया जाता था। अस्तबल में विभिन्न प्रकार के घोड़े अलग-अलग रखे जाते थे। युद्ध के लिए विभिन्न नस्लों के घोड़ों को नियमित रूप से प्रशिक्षित किया जाता था। खच्चरों का उल्लेख अर्थशास्त्र में भी किया गया है, जो मौर्य काल में उनकी उपस्थिति का संकेत देता है।

मौर्य काल में हाथी बहुत महत्वपूर्ण जानवर थे। उनका उपयोग युद्ध में किया जाता था, क्योंकि वे किले पर धावा बोलने के लिए बहुत उपयोगी थे; विशाल दरवाज़ों को तोड़ना और घने जंगलों और दलदली भूमि में भी जाना। युद्ध और सवारी के लिए हाथियों को किले के अंदर रखा गया था। हाथी को मारने वाले को मौत की सज़ा दी जाती थी। हाथी के दाँत बहुमूल्य माने जाते थे।

निष्कर्ष

पशुपालन मानव जाति के जीविकोपार्जन का एक प्राचीनतम साधन है जो आधुनिक समयमें भी अपनी प्रासंगिकता को बरकरार रखें हुआ है। आज भी भारत में दुधारू गाय की 30 से अधि देसी नस्लें, भैंसे की 15 से अधि नस्लें बकरी की 20 नस्लें, भेड़ की 42 नस्ले, ऊँट की चार नस्लें, घोड़ा की विकास मानवीय वुद्धि बल से तीव्र हो गया। संभवतः यही कारण है जिसके कारण इतिहासकारों ने इसे क्रांतिकारी युग भी कहा है। मानव सभ्यता की इस कालावधि में इतने क्रांतिकारी परिवर्तन हुए है कि विकास क्रम में नव पाषाण युगनी क्रांति के रूप में इसका अध्ययन इतिहास वेत्ता करते हैं। सही मापने में सर्वप्रथम मानव-सभ्यता का आरंभ ऐतिहासिक क्षितिज पर इसी समय से माना जाता है। इसी कालखंड में भारत के लोगों को कृषि का ज्ञान हुआ। वैसे यह कहना तो बहुत कठिन है कि कृषि की उत्पत्ति कैसे हुई पर उसे मानना की जिज्ञासू बुद्धि का कमाल माना जाता है। इसी की प्रेरणा से मनुष्यों ने अन्य, फल,-फूल उपजाने की कला विकसित की। हल का आविष्कार किया ओर पशुपालन भी इसी के साथ खेती का अंग बन गया। कृषि के लिए पशुपालन आवश्यक हो गया। इन दोनों ही आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए मनुष्यों को एक निश्चित और निर्धारित दायरे में रहने की जरूरत महसूस हुई और फिर भारत में संपूर्ण मानवीय समाज बनने की राह प्रस्थत हुई।

संदर्भ

1. क्लटन-ब्रॉक, जूलियट (1999)। पालतू स्तनधारियों का एक प्राकृतिक इतिहास। कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस। पीपी 1-2। आईएसबीएन 978-0-521-63495-3.
2. ए बी सी डी ई "जानवरों को पालतू बनाने का इतिहास"। हिस्ट्रीवर्ल्ड। 3 जून 2017 को लिया गया।
3. पशुपालन एवं दूग्ध उत्पादन, कृषि विभाग बिहार, प्रकाशन कृषि प्रोघेगिकी प्रबंध अभिकरण (आत्मा) जहानाबाद, पृ. सं – 15
4. गुप्ता, अनिल के. इन ओरिजिन ऑफ एग्रीकल्चर एंड डोमेस्टिकेशन ऑफ प्लांट्स एंड एनिमल्स लिंक्ड टू अर्ली होलोसीन क्लाइमेट अमेलियोरेशन, करंट साइंस, वॉल्यूम। 87, नंबर 1, 10 जुलाई 2004 59. भारतीय विज्ञान अकादमी।
5. क्लटन-ब्रॉक, जूलियट (1981)। पालतू जानवर आदिकाल से। हेनीमैन। पी 145.